मंत्र का यह अपमान कथानक, सचमुच ही हैं हृदय विदारक ।।३४।।
भावों से भी कभी न करना, सदा मंत्र पर श्रद्धा करना ।।३५।।
इसके लेखन में भी फल हैं, हाथ-नेत्र को जाए सफल है ।।३६।।
णमोकार की बैंक खुली हैं, ज्ञानमती प्रेरणा मिला हैं ।।३७।।
जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में, मंत्रों का व्यापक संग्रह है ।।३८।।
इसकी किरण प्रभा से जग में फैले सुख शान्ति जन जन में ।।३९।।
मन वच तन से इसे नमन हैं, महामंत्र का करूं स्मरण मै ।।४०।।

शुभ छन्दः- यह महामंत्र का चालीसा, जो चालीस दिन तक पढ़ते है।
ॐ अथवा असिआउसा मंत्र या पूर्ण मंत्र जो जपते है।।
ॐ कारमयी दिव्यध्वनि के वे इक दिन स्वामी बनते है।।
परमेष्ठि पद को पाकर वे खुद णमोकार मय बनते है।। १ ।।

पच्चीस सौ बाईस वीर शब्द आश्विन शुक्ला एकम तिथि में।
रच दिया ज्ञानमति गणिनी की शिष्या ''चन्दनामती'' जी ने।।
मैं भी परमेष्ठि पद पाऊँ, प्रभू कब ऐसा दिन आयगा।।
जब तेरा मन अन्तर्मन में, रमकर पावन बन जाएगा।। २ ।।

श्री णमोकार मन्त्र महात्म्य-हिन्दी

प्रबल कर्म धन राशि मिटाता, भव पर्वत को वज्र समान,
स्वर्ण मुक्ति पर ले जाने में नेता जो निर्विघ्न प्रधान।
अंधकूपसम राग मोह में पतित जनों को कर अवलम्ब,
सर्व-चराचर का संजीवन मंत्रराज हैं रक्षास्तम्भ ।।१।।

एक तरफ तो तीन लोक हो मन्त्रराज हो दूजी ओर,
रखकर यदि कोई तौले तो मन्त्रराज भारी ले ठौर।
पंच परमगुरु नमनरूप इस महामन्त्र की जो महिमा,
उसको नहीं कह सकता कोई चाहे जितनी मति गरिमा ।।२।।

काल अनन्त बीते पहले फिर आगे भी बीतेंगे,
उनमें शाश्वत रहा मन्त्र यह, गाई महिमा गावेंगे।
नहीं आदि हैं नहीं अन्त हैं मन्त्र अनादि निधन यह ही,
इस को जपता हैं जो प्राणी शविपद पाता है वह ही ।।३।।

चलते उठते गिरते पड़ते और जागते या सोते,
न्हाते धोते धरा पीठ पर चाहे लोट-पोट होते।

जो करता है स्मरण मन्त्र का वांछित फल पा जाता है,
भक्ति-भाव से प्रेरित होकर संकट सभी मिटाता ।।८।।
रण समुद्र के करि भुजंग के सिंह व्याघ्र के रोगों के,
शत्रु अग्नि के वध बन्धन के और किये सब लोगों के।
चोर डाकिनी प्रेत ग्रहों के राक्षस भूत पिशाचों के,
इस नवकार मंत्र जपने से भय मिट सुख होते चौखे ।।९।।
जो श्रद्धालु जितेन्द्रिय श्रावक पंच परमगुरु ध्यानी हो,
बुद्ध शुद्ध उच्चारण करता परम शुद्ध सुज्ञानी हो।
श्वेत सुगन्ध लाल पुष्पों से मंत्रराज को जो जपता,
विश्व पूज्य तीर्थंकर बनता विधि पूर्वक ऐसा करता ।।६।।
चन्द्र सूर्य सम हो जाता है और सूर्य होता शशिरूप,
नभ समान पाताल बनेगा भूमि बने सुरलोक अनूप।
अदभुत महिमा मंत्रराज की कहें कहां तक सब असमर्थ,
महामंत्र जो जपता है उसके सफलित वांछित अर्थ ।।७।।
मुक्ति धाम जिसने भी पाया उसने मन्त्र जपा यह ही,
बिना नहीं इस मन्त्र जाप्य के रहे सभी यों के यों ही।
सर्व जगत उद्धार हेतु यह मन्त्र शरीर बना जिनका,
उनहीं से शिव पद पाया है और क्लेश मेटा मनका ।।८।।
चाहे हिंसक झूठा होवे परधन परनारी हर्ता,
अन्य निंद्य पापों में रत पर पाठ मन्त्र का नित कर्ता।
वह अपराध शीघ्र छोड़ेगा अन्त समय सुख पायेगा,
निज पापों की निन्दा करके दुर्गति से बच जायेगा ।।९।।
धर्म यही नवकार मंत्र है यही देव जिन पति का रूप,
यही सबल व्रतमूल लोक में यही अमृतफल रस का कूप।
अधिक कथन से क्या है मतलब यह अलभ्य फल का दाता,
ऐसा कोई भी नहीं वांछित जो इससे ही नहीं मिलता ।।१०।।
जो शिला लेख की भांति हृदय में मन्त्रराज अंकित करता,
चलता फिरता उठता सोता जगता कुछ करता रहता।
दुःख सुख वन गिरि अब्धि गगन में जहांतहां भी रहो कहीं,
मन्त्रराज का स्मरण करें जो पा सकता है क्लेश नहीं ।।११।।

तीन लोक में सार अतुल सब रिपू का हर्ता,
भव दुःख करदे दूर विषय-विष का हैं हर्ता,
करें कर्म निर्मूल सिद्धि सब सुख का दाता,
शिव-सुख केवल बोध देत उसे जो जपता रहता।।१२।।

सुरसपद को हैं यह देता मुक्ति रमा को वश करता,
चारों गति की विपदा हरता नित रिपुओं की कृति हरता।
दुर्गति का स्तम्भन करता रागद्वेष सारे हरता,
पंच नमन मय मन्त्राराधन सब ही की रक्षा करता।।१३।।

सुख दुख संकट विपद में रण से दुर्गम पंथ।
जपों मन्त्र नवकार नित सब विघ्नों का अन्त।।१४।।

इति श्री णमोकार मन्त्र महात्म्य भाषा समाप्तम्

महामंत्र णमोकार

नवकार मंत्र ही महामंत्र, निजपद का ज्ञान कराता हैं।
नित जपों शुद्ध मन वच तन से, मन वांछित फल का दाता हैं।।१।।

पहला पद श्री अरिहंताणं, यह आतम ज्योति जगाता हैं।
यह समोसरण की रचना का, भव्यों को याद दिलाता हैं।।२।।

दूजा पद श्री सिद्धाणं हैं, यह आतम शक्ति बढ़ाता हैं।
इस से मन होता हैं निरमल, अनुभव का ज्ञान कराता हैं।।३।।

तृतीय पद श्री आयरियाणं, दीक्षा में भाव जगाता हैं।
दुःख से छुटकारा शीघ्र करे, सुखसागर में पहुँचाता हैं।।४।।

हैं उपाध्याय यह चौथा पद, जिन धर्म को यह चमकाता हैं।
करमाश्रव को ढ़ीला करता, यह सम्यक ज्ञान बढ़ाता हैं।।५।।

हैं पाँचवां पद श्री साधू का, यह जैन तत्व सिखलाता हैं।
दिलवाता हैं यह ऊंचा पद, संकट से शीघ्र छुड़ाता हैं।।६।।

यह अनादि निधन हैं महामन्त्र, जिन शासन यह बतलाता हैं।
प्रभु के चरणों में जपने से, कर्मो को शीघ्र नशाता हैं।।७।।

तुम जपों निरंतर महामंत्र, अनुपम वैराग्य बढ़ाता हैं।
जपता भविजन जो श्रद्धा से, मन को बहु शान्त बनाता है।।८।।

सम्पूर्ण रोग को शीघ्र हरे, जो मंत्र भाव से ध्याता हैं।
हित 'भव्य' की शिक्षा ग्रहण करे, यह जामन मरण मिटाता हैं।।९।।